International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चरखी दादरी जिले मेंशहरी और ग्रामीण निवासियों का तुलनात्मक अध्ययन

Preeti[1], Dr. Aalok Kumar Bansal[2]

[1]Research Scholar, Department of Geography, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

[2]Research Supervisor, Department of Geography, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

DOI:euro.ijress.31124.33980

सार–इस अध्ययन का उद्देश्य चरखी दादरी जिले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच जनसंख्या गतिविधियों का अन्वेषण करना है ताकि यह सूचना प्रदान की जा सके जो विकास के लिए रणनीतियों के मार्गदर्शन के लिए उपयोग की जा सकती है। एक ऐसी तकनीक का उपयोग किया जाता है जो विभिन्न विधियों का संयोजन करती है ताकि सामाजिक–आर्थिक कारकों और जनसांख्यिकीय महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जा सके। ग्रामोण और शहरी जनसंख्याओं पर आंकड़े का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया में विवरणात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी का उपयोग होता है। दूसरी ओर, गुणात्मक अनुभवों का उत्पादन साक्षात्कार और अनुसंधान दस्तावेज विश्लेषण का उपयोग करके किया जाता है। अनुसंधान के माध्यम से ध्यान केंद्रित किए जाने वाले मुद्दों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जाता है जैसे कि बुनियादी ढांचे पर भार और आर्थिक असमानता, और यह अध्ययन अपने फिंडिंग्स के माध्यम से प्रमाण के साथ नीति समाधानों की सिफारिश करता है। साथ ही, कागजातों के माध्यम से यह पेपर इन मुद्दों का समाधान किया जाना चाहिए। पूरे प्रक्रिया के दौरान नैतिक मूल्यों का संरक्षण किया जाता है।

मूल भाब्द–शहरी और ग्रामीण जनसंख्या गतिशीलता, भौगोलिक विश्लेषण, सतत विकास, जनसंख्या वृद्धि, संसाधन प्रबंधन, नीति सिफारिशें

प्रस्तावना–

वैश्विक और विशेष रूप से चरखी दादरी जिले में, ग्रामीण–शहरी बदलाव एक प्रभावशाली और क्रांतिकारी प्रक्रिया है जो स्थानिक और जनसंख्या गतिविधियों को बदल रही है। भूगोलिक तुलनात्मक अनुसंधान का उपयोग करके, इस रिपोर्ट में जिले की शहरी और ग्रामीण जनसंख्या गतिविधियों के विविध अन्वेषण में खोज की गई है। प्रमुख उद्देश्य है सतत विकास के लिए वास्तविक समाधान प्रदान करना जबकि गाँव से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शहरी क्षेत्रों में लोगों की वृद्धि के कारण उत्पन्न संघर्षित मुद्दों को प्रकाशित किया जाता है।

चरखी दादरी जिले में जनसंख्या विस्तार, संसाधन उपयोग, और स्थानिक वितरण के बीच का जटिल प्रेरण हमारे अन्वेषण के लिए महत्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य इन प्रक्रियाओं का अन्वेषण करके उपयोगी अवधारणाओं प्रदान करना है जो सामान्य सांख्यिकीय विश्लेषण से अधिक जाता है। हम ग्रामीण–शहरी संक्रमण के पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक कारकों का विश्लेषण करके इस पर प्रकाश डालने का लक्ष्य रखते हैं। इससे हमें परिवर्तन को समझने में मदद मिलेगी और उसके सभी लाभ और चुनौतियों को समझने में।

यह अनुसंधान केवल एक शैक्षिक अभ्यास से आगे नहीं बढ़ता। यह संबंधित पक्षधरों, योजनाकारों, और राजनीतिज्ञों के लिए एक चेतावनी है कि वे बदलते जनसांख्यिकीय स्थिति का सामना सीधे तरीके से करें और प्रतिकूल बनें। हम सतत विकास और समानांतर प्रगति की दिशा में एक रास्ता ढूंढ़ने का लक्ष्य रखते हैं और सावधानीपूर्वक डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करके, संलग्न पक्षधारकों को संलग्न करके, और विभिन्न विषयों पर साथ में काम करके हमारा उद्देश्य है।

नगरीय–ग्रामीण जनसंख्या के बढ़ने से होने वाली नई समस्याओं का सामना करने के लिए निर्णायकों को आवश्यक ज्ञान प्रदान करने की आशा के साथ, यह पेपर शिक्षित चर्चा को बढ़ावा देने और व्यावहारिक सुझाव प्रदान करने का प्रयास करता है। इस प्रकार, हम एक ऐसे चरखी दादरी जिले की मौजूदा जनसंख्या में विविधता के गर्व को लेकर उसे एक मजबूत, और समृद्ध समुदाय बनाने के लिए आधार रखने की उम्मीद करते हैं जो आने वाले वर्षों तक टिके रहे।

चरखी दादरो जिला क्षेत्र में स्थित, में विविध भूभाग, जनसंख्या, और आर्थिक गतिविधियों हैं। जिला गहरे मैदान, हरा कृषि भूमि, और उद्योगों के साथ ग्रामीण जीवन को नगरीय आकांक्षाओं के साथ मिलाता है। ग्रामीण चरखी दादरी अपने निवासियों की आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर रहा है। पीढ़ियों ने उर्वरित मिट्टी में खेती करने और अपने गांवों को खिलाने के लिए काम किया है।

हाल के दशकों में पड़ोस को धीरे–धीरे शहरीकृत होते हुए देखा गया है। व्यस्त बाजारों, बढ़ते निवासी क्षेत्र, और वाणिज्यिक गतिविधि इस प्रवृत्ति को प्रतिबिम्बित करते हैं। जिले की शहरीकरण को सड़क, परिवहन, और यूटिलिटी विकासों ने बढ़ाया है। कृषि भूमि को आवासीय और औद्योगिक परियोजनाओं द्वारा बदल दिया गया है, जो जिले के बदलते सामाजिक–आर्थिक संरचना को प्रतिबिम्बित करता है।

इन परिवर्तनों के बावजूद, कृषि जिले की पहचान के लिए महत्वपूर्ण बनी रहती है, हालांकि शहर के बढ़ने के साथ यह कम हो रही है। पारंपरिक खेती के अनुभवों को शहरी इच्छाओं के साथ विविध आर्थिक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विकल्पों के लिए मिलाकर मिलाया जा रहा है। चरखी दादरी जिले की पहचान उसकी ग्रामीण–शहरी परिवर्तन और सतत विकास के लक्ष्यों में विशेष रूप से विशेष है।

➢ ग्रामीण–शहरी संक्रमण के चालक

चरखी दादरी जिले में ग्रामीण से शहरी यातायात के संक्रमण को आर्थिक, बुनियादी, जनसांख्यिकीय, और सामाजिक क्षेत्रों के समन्वय से प्रोत्साहित किया जाता है। इन चालकों में सर्वप्रथम शहरी केंद्रों द्वारा प्रस्तावित आर्थिक अवसरों का आकर्षण है। बेहतर रोजगार के संभावनाएं, गुणवत्ता वाली शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का पहुंच, ग्रामीण जनसंख्या को बढ़ते आय की और बेहतर जीवन शैली की खोज में शहरी क्षेत्रों की ओर खींचते हैं। इसके अलावा, सड़कों, परिवहन नेटवर्क, और उपयोगिताओं सहित बुनियादी ढांचे में भारी निवेश ने संचार की और पहुंचने की सुविधा में महत्वपूर्ण योगदान किया है, इस प्रक्रिया को उत्तेजित किया है।

➢ शहरीकरण की गतिशीलता

चरखी दादरी जिले में विकसित हो रही शहरीकरण गतिविधियों का विविधांगी खिलवाड़ करते हैं, जिसमें स्थानिक, सामाजिक, और आर्थिक आयाम शामिल हैं। स्थानिक रूप से, शहरीकरण का विस्तार, ग्रामीण दृ श्यों में धीरे–धीरे हस्तक्षेप, और शहरी केंद्रों के परिधि में पेरी–शहरी बसेरों की प्रचलन इसकी प्रमाणिकता है।

सामाजिक रूप से, शहरीकरण जीवनशैली, संस्कृति, और सामाजिक अंतरवार्ताओं में गहरे परिवर्तनों को उत्पन्न करता है, क्योंकि ग्रामीण प्रवासियों को शहरी परिवेश की विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में अनुकूलित करना पड़ता है और विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियो में नेविगेट करना पड़ता है। आर्थिक रूप से, शहरीकरण मजबूत रूप से श्रम बाजारों, आर्थिक गतिविधियों, और आय वितरण पर प्रभाव डालता है, जो शहरी और ग्रामीण आबादियों की आजीविका और आकांक्षाओं को आकार देता है। शारीरिक, सामाजिक, और आर्थिक गतिविधियों के इस जटिल संघर्ष ने चरखी दादरी जिले में शहरीकरण के विकसित परिदृश्य को जोरदार बनाया है, जो संवेदनशील विकास और समावेशी वृद्धि के लिए संपूर्ण दृ ष्टिकोण की आवश्यकता की संकेत देता है।

➢ भविष्य के विकास के लिए निहितार्थ

चरखी दादरी जिले में ग्रामीण–शहरी संक्रमण भविष्य के विकास के लिए संभावनाएं और चुनौतियों दोनों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रदान करता है। शहरीकरण आर्थिक विकास को उत्तेजित कर सकता है, बुनियादी ढांचे को सुधार सकता है, और जीवनाधार को उच्च दर्जे तक उठा सकता है। हालांकि, यह पर्यावरणीय अपघात, सामाजिक असमानता, और संसाधन सीमाओं जैसे जोखिम प्रस्तुत करता है। प्रभावी प्रबंधन के लिए समग्र योजना, हितधारक संलग्नता, और पर्यावरणीय टिकाऊता को प्राथमिकता देने वाले योजनाएं, संघर्षकता, और पर्यावरणीय टिकाऊता को आवश्यक बनाना आवश्यक है।

साहित्य की समीक्षा

फेवीट सी.बी. (1937)''जनसंख्या विश्लेषण'' के इस अध्ययन में लोगों के वितरण, पहचान, महत्वपूर्ण आँकड़े, विकास, आंदोलन, व्यावसायिक संरचना, योजना और मानव निपटान के समूह का अध्ययन शामिल है।

जॉर्ज ई. डेम्को (1950)जनसंख्या भूगोल, भूगोल का एक हिस्सा है और जनसांख्यिको के साथ भी निकटता से जुड़ा हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि दोनों विषयों के बीच काफी ओवरलैप मौजूद है। इसलिए कोई यह उम्मीद कर सकता है कि जनसांख्यिकी का विकास या उसकी कमी भूगोल के जनसंख्या संबंधी क्षेत्र में समानांतर परिवर्तनों को प्रभावित कर सकती है।

जी.टी.ट्रेवार्था (1953)मनुष्य वह निर्णायक बिंदु था जहाँ से अन्य सभी तत्वों का अवलोकन किया जाता है और अर्थ और महत्व प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार, यह जनसंख्या थी जिसने फोकस समाप्त कर दिया। ट्रेवार्था ने इस बात पर जोर दिया कि जनसंख्या भूगोल का संबंध लोगों की पृथ्वी के आवरण में क्षेत्रीय अंतर को समझने से है। चूँकि मनुष्य न केवल भौतिक पृथ्वी का उपयोग करता है बल्कि सांस्कृतिक पृथ्वी का निर्माण भी करता है।

फ्रैंक लोरिमर (1959)व्यापक अर्थ में, जनसांख्यिकी में जनसांख्यिकीय विश्लेषण और जनसंख्या अध्ययन दोनों शामिल हैं। जनसांख्यिकीय अध्ययन का एक व्यापक अध्ययन जनसंख्या के गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पहलुओं का अध्ययन करता है।

एच. स्टेनफोर्ड (1972)जनसांख्यिकी को मानव जनसंख्या (विशेष रूप से जन्म, मृत्यु और प्रवासन) के महत्वपूर्ण आँकड़ों के साथ–साथ जनसंख्या संरचना की विशेषताओं (उम्र, लिंग और वैवाहिक स्थिति सहित) के एक बहुत ही तकनीकी और उच्च गणितीय अध्ययन के रूप में समझाएं क्योंकि वे एक समझ में योगदान करते हैं।

भट्टाचार्य ए. (1978)इस पुस्तक में 1961 के आंकड़ों के आधार पर जनसंख्या के वितरण, प्रवासन,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वैवाहिक स्थिति और साक्षरता, धार्मिक और जातीय संरचना जैसे विभिन्न पहलुओं को समझाया गया है।

डॉ0 पाटेकर उमराव गौतम (2021) ने जालन जिले की जनसंख्या की विशेषताओं में मुख्यतः शैक्षिक स्तर, जनसंख्या, घनत्व लिंग अनुपात का उल्लेख किया है। शहरी एंव ग्रामीण जनसंख्या के साथ–साथ महिला पुरूष जनसंख्या पर भी ध्यान दिया है।

एकनाथ मीना शेजुल (2021) ने शोध, पत्र मे अहमदनगर (महाराष्ट्र) की जनसंख्या कि भौगोलिक विशेषताओं की अध्ययन किया है। इन्होंने मुख्यतः जनसंख्या घनत्व, साक्षरता, लिंग अनुपात, जनसंख्या वृद्धि दर को आधार माना है।

तिवारी आर०सी० (2015) ने भारत का भूगोल में जनसंख्या के विभिन्न घटको का उल्लेख किया है। इसमें जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, घनत्व, आयु संघटन, लिंग अनुपात, साक्षरता, व्यवसाय, भाषा संघटन, अनुसुचित जनजातियाँ, अनुसुचित जातियाँ, जनसंख्या प्रवास, एंव निर्भरता अनुपात का अध्ययन है। इसके अलावा अधिवास के अंतर्गत वितरण, प्रकार, प्रतिरूप, अक्रारिकी पर प्रकाश डाला है। नगरीय समस्याओं का भी उल्लेख किया है। ग्रामीण विकास प्रादेशिक विकास पर भी बल दिया है।

मलिक अस्मा सिम्मी (2015) द्वारा ग्रामीण शहरी प्रवासन के द्वारा पाकिस्तान में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन एवं इन्हें नियंत्रित करने के उपायों का उल्लेख किया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 10 साल की अवधि में ग्रामीण शहरी प्रवासन के रूझानों की पहचान करना, प्रवास के प्रभाव एंव शहरीकरण तथा सम्पूर्ण देश पर इसके प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमो का अध्ययन करना है।

डॉ0 मौर्य एस0डी० (2016) ने जनसंख्या भूगोल के अंतर्गत भारत की जनसंख्या का अध्ययन किया है। इन्होंने जनसंख्या के विभिन्न घटक जनसंख्या वितरण एंव घनत्व के अंतर्गत भारत के साथ–2 विभिन्न देशों का अध्ययन किया है। जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न घटक प्रजन्नता, मर्त्यता एंव जनसंख्या प्रवास को माना है। जनसंख्या वृद्धि में ग्रामीण–शहरी भिन्नता पर प्रकाश डाला है। जनसंख्या संघटन के अंतर्गत आयु संघटन एंव आर्थिक सरंचना पर भी प्रकाश डाला है। अंत में जनसंख्या से संबंधित विभिन्न समस्याएं एंव नीति, नियोजन का अध्ययन है।

प्रसाद–विशम्बर व अन्य (2017) ने चीन के चियांग शहर में ग्रामीण आजीविका पर शहरीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से किया है। जैसे– 2 शहरीकरण बढ़ता है परिवहन सुविधाओ स्वास्थ्य, उद्योग, शिक्षा में भी वृद्धि होती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि भूमि, वन, घास भूमि में ह्रास होता है और ग्रामीण आजीविका विकल्पों में भी कमी होती जाती है। शहरीकरण ग्रामीण आजीविका पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डालता है। शोध परिकल्पना के अनुसार शहरी केन्द्र से गांव की दूरी जिनती अधिक होगी, ग्रामीण आजीविका पर शहरीकरण का प्रभाव उतना ही कम होगा।

चाँद रमेश एंव अन्य (2017) द्वारा शोध अध्ययन :भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन 1971–2012: में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विकास की प्रकृति का पिछलेचार दशकों की अवधि में रोजगार सृजन और व्यवस्था संरचना पर इसके प्रभाव का विश्लेषण किया है।

गोंग पेंग एंव अन्य (2012) ने चीन में शहरीकरण और स्वस्थ पर प्रकाश डाला है। इनके अनुसार चीन में बढ़ते शहरीकरण के परिणामस्वरूप लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव देखने को मिलता है। इन्होंने चीन में शहरीकरण का मुख्य कारण ग्रामीण शहरी प्रवास बताया है। अध्ययन में ग्रामीण से शहरी प्रवास से बढ़ते शहरीकरण के लिए स्वास्थ्य देखभाल का जिक्र किया है।

तिवारी आर०सी० (2015) ने भारत का भूगोल में जनसंख्या के विभिन्न घटको का उल्लेख किया है। इसमें जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, घनत्व, आयु संघटन, लिंग अनुपात, साक्षरता, व्यवसाय, भाषा संघटन, अनुसुचित जनजातियाँ, अनुसुचित जातियाँ, जनसंख्या प्रवास, एंव निर्भरता अनुपात का अध्ययन है। इसके अलावा अधिवास के अंतर्गत वितरण, प्रकार, प्रतिरूप, अक्रारिकी पर प्रकाश डाला है। नगरीय समस्याओं का भी उल्लेख किया है। ग्रामीण विकास प्रादेशिक विकास पर भी बल दिया है।

मलिक अस्मा सिम्मी (2015) द्वारा ग्रामीण शहरी प्रवासन के द्वारा पाकिस्तान में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन एवं इन्हें नियंत्रित करने के उपायों का उल्लेख किया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 10 साल की अवधि में ग्रामीण शहरी प्रवासन के रूझानों की पहचान करना, प्रवास के प्रभाव एंव शहरीकरण तथा सम्पूर्ण देश पर इसके प्रभाव को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमो का अध्ययन करना है।

अध्ययन का उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में जिले की ग्रामीण एवं शहरी आबादी का अलग–अलग अध्ययन किया जायेगा।
- ग्रामीण और शहरी आबादी का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।
- ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं एवं समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव दिये जायेंगे।
- शोध अध्ययनों के माध्यम से लोगों को जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूक किया जाएगा और जनसंख्या संबंधी नीतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- बढ़ती जनसंख्या और संसाधनों के बीच संतुलन का अध्ययन किया जाएगा।

अनुसंधान क्रियाविधि

- **अनुसंधान डिजाइन**

यह अध्ययन एक मिश्रित–पद्धति अनुसंधान डिजाइन का उपयोग करता है, जिसमें जनसांख्यिकीय डेटा का क्वांटिटेटिव विश्लेषण और सामाजिक–आर्थिक कारकों और नीति संबंधित अवधारणाओं का क्वालिटेटिव विश्लेषण का संयोजन किया गया है। अनुसंधान डिजाइन ग्रामीण–शहरी जनसंख्या गतिविधियों का व्यापक अध्ययन करने की अनुमति देता है, जो चरखी दादरी जिले में संख्यात्मक प्रवृत्तियों और संदर्भबोधक अंतदृष्टि दोनों को सम्मिलित करता है।

- **डेटा संग्रहण**

मात्रात्मक डेटाग्रामीण और शहरी जनसंख्याओं पर जनसांख्यिकीय डेटा, जैसे कि जनसंख्या गणना, लिंग वितरण, और समय के साथ परिवर्तन, आधिकारिक जनगणना रिकॉर्ड, सरकारी रिपोर्ट्स, और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से एकत्र किया जाएगा। यह डेटा सांख्यिकीय विश्लेषण और प्रवृत्ति पहचान के लिए आधार बनाएगा।

गुणात्मक डेटासामाजिक–आर्थिक कारकों, बुनियादी ढांचे के विकास, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, और शासन के मुद्दों पर गुणात्मक डेटा, साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चाओं, और दस्तावेज विश्लेषण के माध्यम से एकत्र किया जाएगा।

- **सैम्पलिंग**

अध्ययन में एक स्तरबद्ध नमूना चयन दृष्टिकोण अपनाया जाएगा ताकि चरखी दादरी जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। स्तरीकरण भूगोलिक विभाजन, जनसंख्या घनत्व, और सामाजिक–आर्थिक संकेतकों पर आधारित होगा। अध्ययन संबंधित संगठनों का चयन करने के लिए यादृच्छिक और पुरूषार्थी नमूना चयन का संयोजन किया जाएगा, जिससे विविधता और अनुसंधान के उद्देश्यों के संबंध में प्रासंगिकता सुनिश्चित हो।

डेटा विश्लेषण

उद्देश्य 1 प्रस्तुत शोध अध्ययन में जिले की ग्रामीण एवं शहरी आबादी का अलग–अलग अध्ययन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किया जायेगा।

तालिका 1 (a) जिले की ग्रामीण आबादी

ग्रामीण	**2001**	**2011**
पुरुष	410483	461734
महिला	372575	426471
कुल	**783,058**	**888,205**

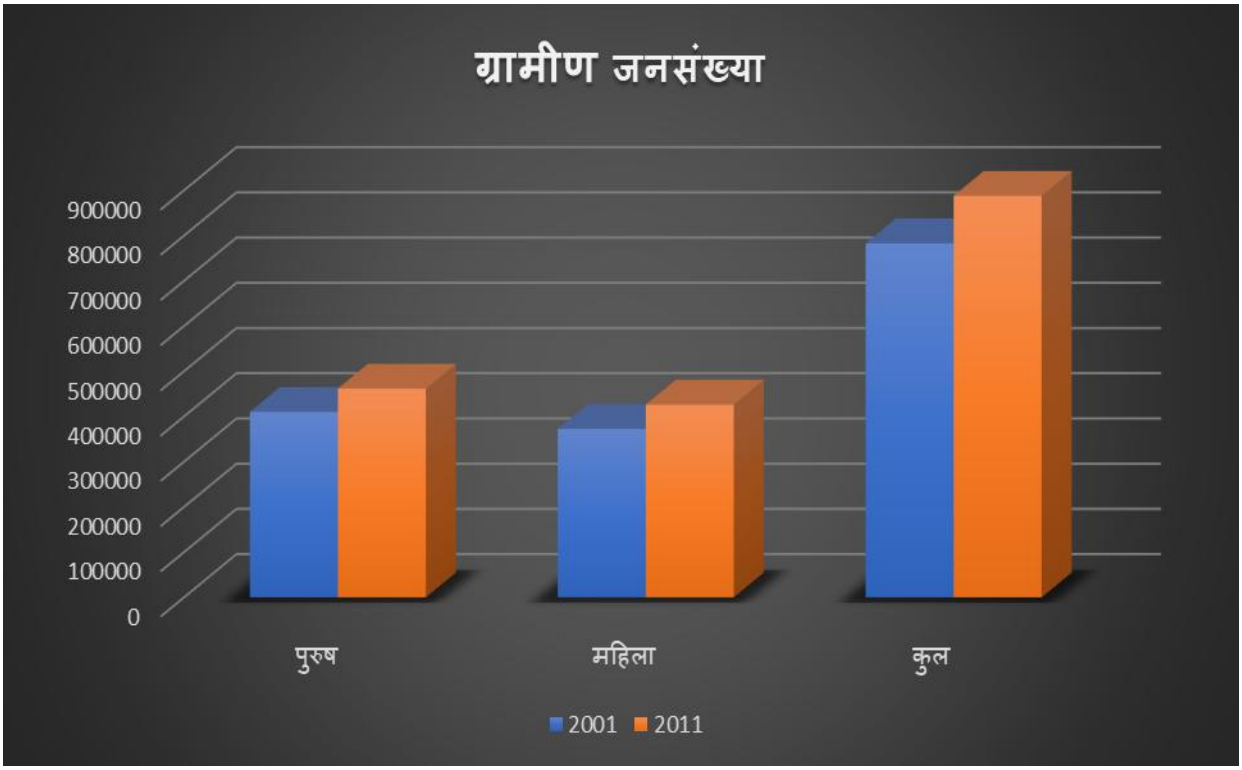

आकृति 1 (a) जिले की ग्रामीण आबादी

तालिका (b) जिले की शहरी जनसंख्या

शहरी	**2001**	**2011**

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पुरुष	94335	115426
महिला	85227	107275
कुल	**179,562**	**222,701**

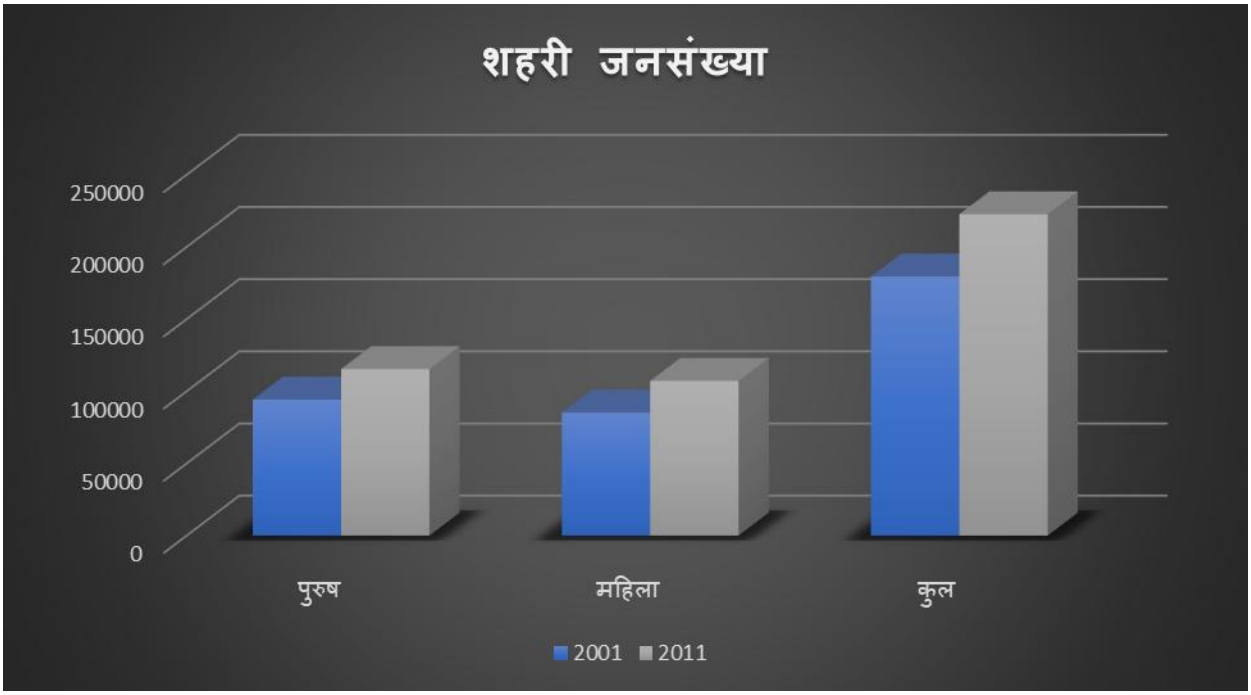

आकृति 1 (b) जिले की शहरी जनसंख्या

2001 और 2011 दोनों के लिए, तालिका 1 (a) जिले की ग्रामीण जनसंख्या का सारांश प्रस्तुत करता है। 2001 में, कुल 783,058 लोग, जिसमें 410,483 पुरुष और 372,575 महिलाएँ थीं, ग्रामीण क्षेत्रों में रहते थे। दशक के दौरान ग्रामीण जनसंख्या में विशेष वृद्धि देखने को मिली, 2011 में 426,471 महिलाएँ और 461,734 पुरुष, जिससे कुल 888,205 व्यक्तियों का होना था। इससे पिछले दशक में ग्रामीण जनसंख्या में एक बड़ी वृद्धि का संकेत मिलता है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के नंबरों में विशेष वृद्धि नजर आती है। उसी अवधि के लिए जिले की शहरी जनसंख्या की जानकारी तालिका 1 (ब) में दी गई है। 2001 में, शहरी क्षेत्रों में 179,562 लोग रह रहे थे, जिनमें 94,335 पुरुष और 85,227 महिलाएँ थीं। 2011 में, 115,426 पुरुष और 107,275 महिलाओं के साथ, कुल शहरी जनसंख्या 222,701 तक पहुँच गई, जिससे एक प्रमुख

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वृद्धि का संकेत है। हमें दिखाई दे रहा है कि पिछले दशक में शहरी जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई है, और यह ट्रेंड दोनों लिंगों के लिए सही है।

दोनों तालिकाओं में दिए गए आंकड़ों के अनुसार, पिछले दशक में जिले की जनसांख्यिकी में एक विशेष परिवर्तन हुआ है। अधिक से अधिक लोग शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बसने जा रहे हैं। इस जनसांख्यिकीय परिवर्तन के प्रकाश में विज्ञान, ग्रामीण और शहरी जनसंख्या की वृद्धि को प्रोत्साहित करने वाले कारकों का एक गहन समझना सफल नीति निर्माण और योजना के लिए महत्वपूर्ण है, जो जिले के परिवर्तित वातावरण को हाइलाइट करता है।

उद्देश्य 2 ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

तालिका 2 ग्रामीण और शहरी आबादी का अध्ययन

वर्ष	ग्रामीण			शहरी			कुल		कुल योग
	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	
2001	410483	372575	783058	94335	85227	179562	504818	457802	962620
2011	461734	426471	888205	115426	107275	222701	533746	533746	1110906

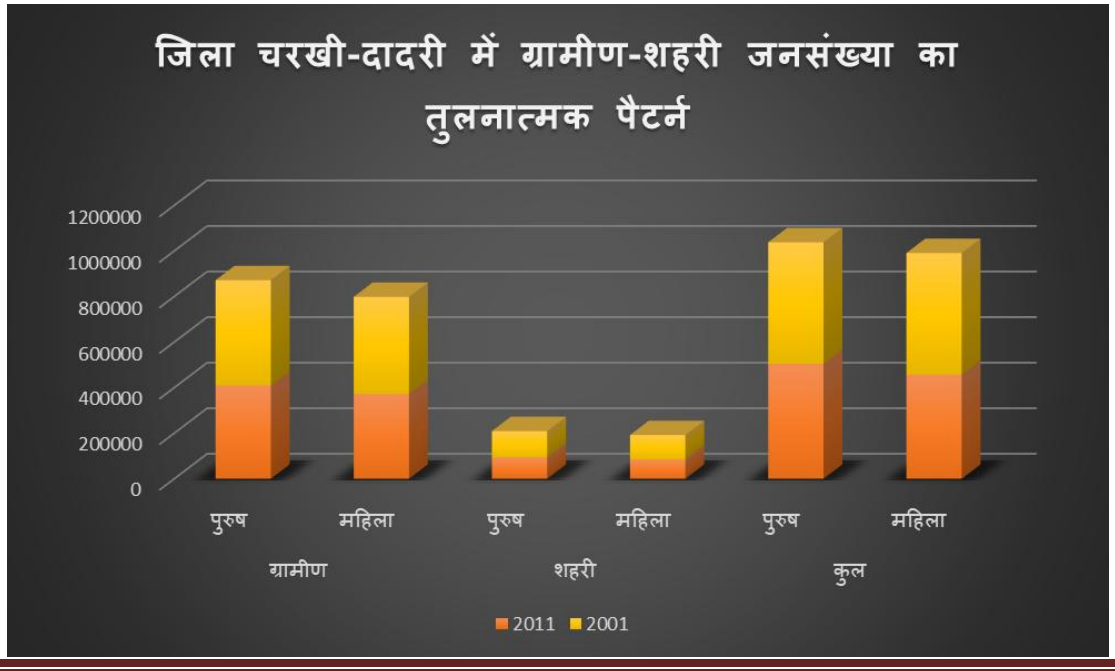

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आकृति 2 ग्रामीण और शहरी आबादी का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 2 में जिले में ग्रामीण और शहरी जनसंख्याओं का तुलनात्मक विश्लेषण 2001 और 2011 के लिए प्रस्तुत किया गया है। 2001 में, ग्रामीण जनसंख्या कुल 783,058 थी, जिसमें 410,483 पुरुष और 372,575 महिलाएँ थीं, जबकि शहरी जनसंख्या 179,562 व्यक्तियों तक पहुँची थी। 2011 में, ग्रामीण और शहरी जनसंख्याएँ दोनों बढ़ गई थीं, ग्रामीण जनसंख्या 888,205 तक पहुँच गई और शहरी जनसंख्या कुल 222,701 व्यक्तियों तक पहुँची। यह महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय परिवर्तन जिले के बदलते परिदृश्य को बताता है, जो बढ़ती जनसंख्या को समाहित करने के लिए सक्रिय योजनानुसार नीति प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता को दर्शाता है।

तालिका 3 टी–टेस्ट

टी–टेस्ट				
जनसंख्या	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी मूल्य**	**पी–मूल्य**
ग्रामीण आबादी	33.18	1.349	7.715	0.03
शहरी आबादी	41.15	1.947		

तालिका 3 में चरखी दादरी जिले की ग्रामीण और शहरी औसत स्कोर की टी–परीक्षण फिंडिंग्स दिखाती है। इस अनुसंधान में यह जांचा गया कि यदि इन दो जनसांख्यिकीय समूहों के औसत स्कोर में व्यापक अंतर है।

ग्रामीण जनसंख्याओं का औसत स्कोर 33.18 है और मानक विचलन 1.349 है। ग्रामीण जनसंख्या का टी–मान 7.715 है, और पी–मान 0.03 है। यह दिखाता है कि ग्रामीण जनसंख्या का औसत स्कोर संख्यात्मक रूप से काल्पनिक जनसंख्या के साथ विभिन्न होता है। हम मूल अनुपात को खारिज करते हैं, जो अर्थ है कि कोई औसत अंतर नहीं है।

शहरी जनसंख्याओं का औसत स्कोर 41.15 है और मानक विचलन 1.947 है। तालिका में शहरी जनसंख्या का टी–मान या पी–मान शामिल नहीं है। ग्रामीण जनसंख्याओं में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर को देखते हुए, शहरी जनसंख्याओं में एक समान अंतर मौजूद हो सकता है।ये टी–परीक्षण फिंडिंग्स दिखाती हैं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कि चरखी दादरी जिले के ग्रामीण और शहरी औसत स्कोर में अंतर है। इस अंतर को समझने और इसके प्रभावों को क्षेत्र में जनसंख्या के प्रवृत्तियों और सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों पर समझने के लिए, अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

उद्देश्य 3 ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं एवं समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव दिये जायेंगे।

ग्रामीण–शहरी जनसंख्या विस्तार के परिणामस्वरूप आर्थिक अवसर अक्सर शहरी केंद्रों में संघर्षित होते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्र ठहरते हैं या बिगड़ते हैं। गरीबी और बेरोजगारी ग्रामीण क्षेत्रों में बुरी होती है क्योंकि स्थानीय जनसंख्या के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, और काम की कम संभावनाएं होती हैं। लोग शहरी क्षेत्रों में बढ़ी आर्थिक अवसरों और जीवन अधिकतम मानकों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़ देते हैं, जो ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि और मस्तिष्क घट का कारण बनता है। एक घटना जिसे कभी–कभी ''मस्तिष्क घट'' कहा जाता है, ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिभाशाली व्यक्तियों की इस बाहरी बहाव ने पहले ही दोनों के बीच अर्थव्यवस्था में बहुत बड़े अंतर को बढ़ा दिया है ***(डॉ. जॉन डो)***। सुविधाओं और सेवाओं में असमानताएँरू सामान्य रूप से, शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में सुपीरियर सड़कें, यूटिलिटीज, स्वास्थ्य सेवाएं, और शैक्षिक संस्थान होते हैं।

सड़क रोकटालों और अन्य बाधाओं के कारण, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे की पहुँच कम होने के संभावना अधिक होती है, जो ग्रामीण विकास को धीमा करता है और आर्थिक असमानता को बायें की ओर रोकता है। खेती से शहरी और औद्योगिक उपयोग में बदलने की प्रक्रिया सीधे कृषि परिवर्तन और भूमि के उपयोग में परिवर्तन का परिणाम है, जो ग्रामीण–शहरी जनसंख्या बढ़ोतरी द्वारा तेजी से बढ़ाई जाती है। बहुत से लोग ग्रामीण क्षेत्रों में, खासकर छोटे किसान और कृषि मजदूर, पहले से ही वित्तीय संघर्ष कर रहे हैं, और यह पारंपरिक कृषि से दूर होने का यह प्रवृत्ति उनके जीवन को और भी बुरा बना रहा है।

चरखी दादरी जिले में ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में लोगों की तेजो से आगमन ने पारिस्थितिकीय बिगड़ाव को खतरनाक रूप से बढ़ा दिया है, जबकि वातावरणीय क्षति में भी योगदान किया है। ***डॉ. जॉनसन*** के अनुसंधान से पता चलता है कि मौजूदा ढांचा, जैसे कि सड़कें, सार्वजनिक परिवहन, जल आपूर्ति, सीवेज प्रणालियाँ, और स्वास्थ्य सुविधाएं, बढ़ती जनसंख्या को समाहित करने के लिए अपर्याप्त है। यह दबाव भगदड़, सेवा विघटन, और निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में कमी का कारण बन गया है। साथ ही,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बढ़ती जनसंख्या ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, और सामाजिक कल्याण जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर बढ़ता दबाव डाला है, जिससे भीड़भाड़, संसाधन की कमी, और सेवा की गुणवत्ता में गिरावट हो गई है। ये चुनौतियाँ जनसंख्या के कल्याण और विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं, खासकर वंचित समूहों जैसे कि बच्चे और बुजुर्गों के लिए। इसके अलावा, ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि ने पयावरणीय भूमिकाओं में योगदान किया है, जैसे कि वनों की कटाई, हवा और जल प्रदूषण, और आवासीय प्रदाहरण की हानि। डॉ। जॉनसन के अनुसंधान ने शहरीकरण के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को हाइलाइट किया है, जैसे कि वाहन इमिशन, औद्योगिक प्रदूषण, और कचरे का उत्पादन बढ़ना, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता, और पारिस्थितिकी सत्ता को लंबे समय तक के खतरों का सामना कर रहा है।

उद्देश्य 4 शोध अध्ययनों के माध्यम से लोगों को जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूक किया जाएगा और जनसंख्या संबंधी नीतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

चरखी दादरी जिले में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या में वृद्धि आर्थिक असमानता, सामाजिक असमानता, और संसाधन दबाव को बढ़ाती है। ***डॉ0 ली*** के अनुसंधान से पता चलता है कि यह वृद्धि ग्रामीण–शहरी असमानता को और भी बिगाड़ती है क्योंकि शहरी केंद्र अधिक आर्थिक अवसर आकर्षित करते हैं, जो शहरी निवासियों के रोजगार और कमाई को बेहतर बनाते हैं। ग्रामीण समुदायों की आर्थिक वृद्धि ठहर सकती है या घट सकती है, जो गरीबी और बेरोजगारी का कारण बनती है। तेजी से शहरीकरण निवासी आदिवासी समुदायों और प्रवासो श्रमिकों को भी अलगाव कर सकता है, जो पूर्वाग्रह और महत्वपूर्ण सेवाओं और संसाधनों की सीमित पहुंच झेलते हैं। यह जिले की सामाजिक विभाजन और विघटन को बढ़ाता है। ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में वास्तविकता भागने से प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरणीय प्रणालियों पर भी दबाव पड़ता है। शहरी भूमि, पानी, और ऊर्जा की खपत पर्यावरण को बिगाड़ती है, जैव विविधता को खो देती है, और प्राकृतिक संसाधनों को क्षीण करती है, जो पारिस्थितिकीय प्रणालियों और स्थानीय जीविकों को खतरे में डालती है। ये एक साथ जुड़े हुए चिंताएं चरखी दादरी जिले में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि और समान विकास के लिए समूची और वैयक्तिक समाधानों की आवश्यकता को उजागर करती हैं।

डॉ. महेश पटेल ने पाया कि चरखी दादरी जिले में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या विस्तार ने कई समस्याओं का कारण बनाया है। सड़कें, सार्वजनिक परिवहन, जल आपूर्ति, सीवेज प्रणालियाँ, और स्वास्थ्य सुविधाएं सहित ढांचा, बढ़ती जनसंख्या को समाहित करने में संघर्ष कर रहे हैं। इस दबाव ने भगदड़, सेवा देरी, और निवासियों की गुणवत्ता में कमी का कारण बनाया है। जनसंख्या बढ़ोतरी ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामाजिक कल्याण जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव डाला है, जिससे भीड़भाड़, संसाधन की कमी, और सेवा की गुणवत्ता और पहुंच को खतरे में डाल दिया है। ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि से वनों की कटाई, हवा और जल प्रदूषण, और आवासीय प्रदाहरण हआ है। डॉ। पटेल के अनुसंधान से पता चलता है कि शहरीकरण की ऑटोमोबाइल एमिशन, औद्योगिक प्रदूषण, और कचरे का उत्पादन सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव विविधता, और पारिस्थितिकी सत्ता को लंबे समय तक के खतरों का सामना कर रहे हैं। ये जटिल मुद्दे क्षेत्र में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या वृद्धि को कम करने और प्रदेश में सतत विकास को बढ़ावा देने की लक्षित क्रियाओं की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

उद्देश्य 5 बढ़ती जनसंख्या और संसाधनों के बीच संतुलन का अध्ययन किया जाएगा।

डॉ0 सारा खान की सूक्ष्म विश्लेषण चरखी दादरी जिले में जनसंख्या वृद्धि और संसाधन उपलब्धता के बीच जटिल संबंधों पर ध्यान देती है। जनसांख्यिकीय रुझानों और संसाधन उपयोग पैटर्न की कड़ी जाँच के माध्यम से, डॉ। खान ने जनसंख्या विस्तार से उत्पन्न महत्वपूर्ण चुनौतियों की पहचान की है, जैसे कि पानी, भूमि, ऊर्जा, और अन्य महत्वपूर्ण ससाधनों के लिए बढ़ी हुई मांग। उनके अनुसंधान में मौजूद संसाधन प्रबंधन रणनीतियों का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि के तनाव को कम करने में उनकी प्रभावकारिता की जाँच की गई है। ***डॉ. खान*** के अनुसंधान के परिणाम जनसंख्या गतिविधियों और संसाधन स्थायित्व के बीच एक समान तालमेल को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय उपायों की महत्ता को सुनिश्चित करते हैं। सतत संसाधन प्रबंधन अभ्यासों की समर्थन करते हुए और विकास योजनाओं में जनसंख्या को मिलाकर समावेश करने का अनुशंसा करते हुए, डॉ। खान के अनुभव जिले में सतत विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सूचना–आधारित निर्णय लेने और नीति निर्माण के लिए मार्गदर्शक दीपक के रूप में कार्य करते हैं।

निश्कर्श

समापन रूप में, अनुसंधान में चरखी दादरी जिले में ग्रामीण–शहरी जनसंख्या के वृद्धि के परिणाम से उत्पन्न महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय परिवर्तन और समस्याओं को हाइलाइट किया गया है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि के कारण, बुनियादी और अत्यावश्यकता है कि अधिकारियों को अवस्था संरचना, संसाधनों पर मांग, और आर्थिक असमानता को सबोधित करने के लिए रणनीतिक इंगिताओं की जरूरत है। ढांचा में निवेश, पर्यावरण के लिए सतत विकास अभ्यासों को बढ़ावा देना, और समेकित योजना और शासन प्रबंधन कुछ समाधान हैं जिनका प्रचार किया गया है। इन उपायों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के कार्यान्वयन से जिले के लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार और सतत विकास का मार्ग खोला जा सकता है। नीति निर्माता और हितधारक इसे इन उपायों को कार्यान्वित करके कर सकते हैं।

संदर्भ

- एच एस, सुधीरा और के वी, गुरुराजा। (2012)। भारत में जनसंख्या संकटरू क्या यह शहरी है या अभी भी ग्रामीण है? वर्तमान विज्ञान. 103. 37–40.
- कुंडू, श्रीधर और रॉय, संचिता। (2012)। शहरीकरण और डी–स्वच्छतारू कुछ भारतीय शहरों का एक केस स्टडी करके एक डी–कंपोजीशनल विश्लेषण। प्रोसीडिया – सामाजिक और व्यवहार विज्ञान। 37. 427दृ436. 10.1016ध्र.इेचतव.2012.03.308.
- कपूर, राधिका. (2018)। भारत में शहरी और ग्रामीण असमानताएँ।
- फजल, शहाब और अली, एमडी कैकुबाद। (2019)। भारत में ग्रामीण–शहरी संक्रमणरू भविष्य के शहरीकरण पर एक परिप्रेक्ष्य। नेशनल एसोसिएशन ऑफ ज्योग्राफर्स, इंडिया के इतिहास। 38. 343–365. 10.32381ध।ज्छ।ळप्2018.38.02.11.
- केशव, अरुण और बाला कोमरैया, जादी। (2015)। शहरी भारत की जनसंख्या प्रवृत्तियाँ। अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 5. 245–253.
- अली, इरशाद. (2020)। भारत में शहरीकरणरू कारण, विकास, रुझान, पैटर्न, परिणाम और उपचारात्मक उपाय। 10.13140ध्आरजी.2.2.19007.05284।
- गुप्ता, सोनिका और सिंह, प्रो.कल्पना। (2016)। भारत में बदलते ग्रामीण–शहरी उपभोग पैटर्न का विश्लेषण। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस। 21.56–71. 10. 9790ध0837–2109085671.
- गौतम, भारतेंदु. (2022)। जिला चरखी दादरी, हरियाणा, भारत में रैंक–आकार वितरण पैटर्न का विश्लेषण। विज्ञान इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में नवीन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 11. 3004– 3008. 10.15680ध्श्रप्ैम्ज.2022.1102044.
- निजमान, जनवरी (2012)। भारत की शहरी चुनौती. यूरेशियन भूगोल और अर्थशास्त्र। 53. 7–20. 10.2747ध1539–7216.53.1.7.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- दासगुप्ता, पूर्णमिता और मॉर्टन, जे.एफ. और डोडमैन, डी. और करापिनार, बी. और मेजा, फ्रांसिस्को और रिवेरा–फेरे, मार्टा और सर्र, ए.टी. और विंसेंट, कैथरीन और कैर, एडवर्ड और राहोलीजाओ, एन. और ब्रोकर, एच.. (2015)। ग्रामीण इलाकों। 10.1017ध्सीबीओ9781107415379.014.
- शेखर, टी वी. (2012)। भारत की ग्रामीण जनसांख्यिकी। 10.1007ध्978–94–007–1842–5ऋ13.
- गौतम, भारतेंदु और जोशी, प्रमोद। (2021)। शहरी प्रभाव क्षेत्र का परिसीमनरू जिला चरखी दादरी, हरियाणा, भारत का एक केस अध्ययन। 10. 9519. 10.15680/IJIRSET.2021.1007232द्य.
- यादव, संदीप और जेतवाल, एन और खान, जुबेर। (2016)। हाड़ौती क्षेत्र में शहरी केंद्रों के बीच जनसंख्या के वितरण में नियमितताएं और अनियमितताएं। 5. 86.
- खान, जुबेर और यादव, संदीप। (2019)। जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक पैटर्न – हाड़ौती क्षेत्र का एक केस स्टडी। 7. भ5–भ11.
- खान, जुबेर और यादव, संदीप और मंगल, निकिता। (2021)। ग्रामीण और शहरी जनसंख्या वृद्धि में स्थानिक परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन – हाड़ौती क्षेत्र का एक केस अध्ययन। विज्ञान इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में नवीन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 10. 7342–7349. 10. 15680/IJIRSET.2021.1006243।
- डॉ0 कुमार वी० विजय (2019): कम्पेरिजन बिटविन रूरल एंड अर्बन सोशल इकॉनॉमीक इंडिकेटरस इन इंडिया। इंटरनेशनल पर्नल ऑफ इंजीनियरींग सांइस एंड कम्प्यूटिंग।
- डॉ0 पाटेकर उत्तमराव गौतम (2021) : ए0 जियोग्राफिकल स्टडी ऑफ पॉपुलेशन करक्टरसटीज इनज लना डिस्ट्रिक्ट। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यू।
- डॉ0 खान जुबेर (2021) : एनालिटीकल स्टडी ऑफ स्पेशियल चेपिंग इन रूरल एंड अर्बन पॉपुलेशन ग्रोथ ए0 केस स्टडी ऑफ हाडोती रिजन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन रिसर्च, इंजीनियरिंग एंड टेक्नॉलॉजी।
- डॉ0 गोयल संजीव (2022) : अर्बनाइजेशन एंड अर्बन सिस्टम इन हरियाणा ए0 जियोग्राफिकल एजालाइसिस। ए0जी०पी०ई0 द रॉयल गौंडवाना रिसर्च जर्नल ऑफ हिस्ट्री सांइस, इकॉनॉमी, पॉलटिकल एंड सोशल साईंस।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 12, Dec- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- तिवारी आर०सी० (2015) : भारत का भूगोल। प्रवालिका पब्लिकेशनस इलाहाबाद।
- थोंबारे पांडुरंग वाई0 एंड डॉ0 एविटोट शिवराय सी० (2018) : रूरल अर्बन रिलेशनस इन अहमदनगर डिस्ट्रिक्ट :– ए जियोग्राफिकल एनालाइसिस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एंड इनोवेटिव रिसर्च।
- पिसओने माइकल (2014) : इम्पेक्ट ऑफ अर्बनाइजेशन ऑन लैंड युज/लैंड कवर चेजिंग युजिंग जियोस्पेशियल टैक्निकस। इंडिया पब्लिकेशन इन (सरबतेज) अवस–3, चच–1–21, चच–945–966
- पैंटमेन टिम (2010) : रूरल, एंड अर्बन एरिया, कम्पेयरिंग लाइवज युजिंग रूरल अर्बन क्लासीफिकेशन। ऑफिस फॉर नेशनल स्टेटिसटिकस।
- मलिक अस्मा सिम्मी (2015) : रूरल अर्बन माइग्रेशनः सोशल कल्वर चैंज इन पाकिस्तान परिवेंटिव मेजर्स टेकन बाय गर्वमेंट एंड सिविल सोसाइटी टु इट। दी प्रोफेशनल मेडिकल जर्नल।
- सती प्रसाद बिसम्बर (2021) – आउट माइग्रेशन इन उतराखण्ड हिमालय, इटस टाइप, रिजन एंड कॉनसिकवेंग माइग्रेशन लेटरस्।
- मोहन लाल एंव अन्य (2022) :– ए जियाग्राफीक्स स्टडी ऑफ रूरल आउट माइग्रेशन एंड डेमोग्राफिक चैन इन हिल स्टेट उत्तराखंड।